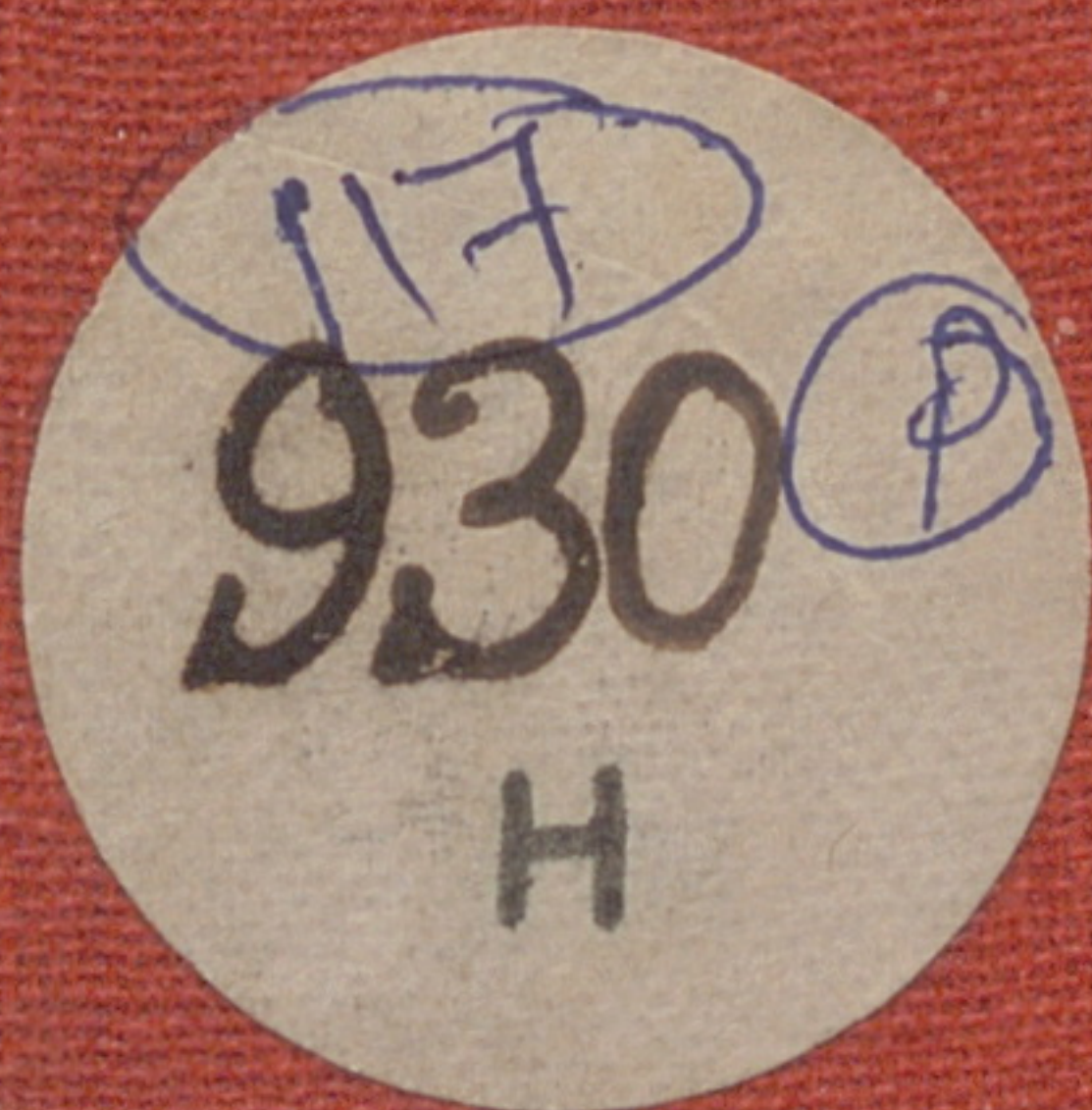




MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi

1232
10/91

आह्वानांक Call No.

अवधि सं० Acc. No.

930

②
2/11

891 431
5/97 M

10 DEC. 1930

ॐ वन्देमातरम् ॐ

महात्मा गान्धी का चक्र



प्रकाशक—
लाला गिराजकिशोर वैश्य आगरा

मूल्य—॥

नौजवानों की तमन्ना

मुर्दा भारत को जिला जायेंगे मरते मरते ।
 नाम जिन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते ॥
 हमको कमजोर समझ बैठे हमारे दुश्मन ।
 उनका अभिमान मिटा जायेंगे मरते मरते ॥
 जुल्म करती है बहुत हिन्द पर नौकरशाही ।
 उसकी बदचाल मिटा जायेंगे मरते मरते ॥
 दिलों पर दुश्मनों के अपनी जवांमर्दी पर ।
 हिन्द का सिका बिठा जायेंगे मरते मरते ॥
 जेलखाने की भी खुश होके बढ़ायेंगे रौनक ।
 एक क्या लाखों बना जायेंगे मरते मरते ॥
 मातृभूमि के लिये जान निछावर कर दें ।
 सबकुछ भारत को पढ़ा जायेंगे मरते मरते ॥
 हैं तो ना चीजें अगर इतनी जरूरत रखते हैं ।
 हिन्द की बन्दों छुड़ा जायेंगे मरते मरते ॥
 भगतसिंह, दत्त, रयानन्द, तिलक, गांधी का ।
 सबको फरमान सुना जायेंगे मरते मरते ॥

गजल

सर करोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ॥
 देखना है जोर कितना बाजुएँ कातिल में है ॥
 रह रवे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में ।
 लज्जते सह्रानवरी दूरिये मंजिल में है ॥
 वक्त आने दे बता देंगे तुम्हें ए आसमां !
 हम अभी से क्या बतावें क्या हमारे दिल में है ॥
 आज फिर मक़तल में कातिल कह रहा है बार बार ।
 क्या तमन्नाएँ शाहादत भी किसी के दिल में है ॥

❀ ओ३म् ❀

ईश्वर प्रार्थना ।

भजन ।

हे पिता दीनों के दुख को टारने वाले हो तुम ।
डूबती नैया को स्वामी तारने वाले हो तुम ॥
तुम पिता हम पुत्र हैं पालन हमारा कर रहे ।
तुम ही सिर्जनहार सबके सारने वाले हो तुम ॥
तुम से बढ़ कर इस जगत में और कोई है नहीं ।
मान अभिमानी मनुज के मारने वाले हो तुम ॥
निरविकारी हो प्रभू आकार से तुम रहित हो ।
शेष तुम ही हो धरा के धारने वाले हो तुम ॥
दुख हरो सुख दीजिये कर जोड़ कहता रूप यों ।
दुख हरण अरु सुख की भिक्षा डारने वाले हो तुम ॥

गज़ल ।

जगदीश यह वित्त है जब प्राण तन से निकले ।
प्रिय धर्म देश रटते यह प्राण तन से निकले ॥
भारत वसुन्धरा पर, सुख शान्ति संयुता पर ।
शश्याम श्यामला पर यह प्राण तन से निकले ॥
देशाभिमान धरते, जातीय गान करते ।
निज देश व्याधि हरते यह प्राण तन से निकले ॥
भारत का चित्त पर हो, युग नेत्र के निकट हो ।
श्री जाह्नवी का तट हो तब प्राण तन से निकले ॥

लहर ।

सुना है तेज करते हैं दुबारा धार खंजर की ।
 करेंगे आजमाइश क्या सुकरर वह मेरे सर की ॥
 सब्र पूछो तो यों बोले नहीं जाहिर खता कोई ।
 मगर कुछ दीख पड़ती है शरारत दिल के अन्दर की ॥
 मेरे दर्द जिगर में आह में नाले में सेवन में ।
 नजर आतो है हरमू सूरते जालिम सितमगर की ॥
 खमीदा करके गर्दन को कहा तेगा जामाई हो ।
 रह गई कबजए कातिल में खाली मूँठ खंजर की ॥

आजादी की दुआ ।

प्रभु हो मेहर की नजरों से गर इस्वाद तेरा हो ।
 तो यह उजड़ा हुआ भारत अहा ! आवाद मेरा हो ॥
 हजारों साल से बे दर्द लोगों के हवाले है ।
 न यूँ गैरों के पंजे में वतन बरवाद मेरा हो ॥
 खुशी रखता है दुनियाँ को सभीका अन्नदाता है ।
 मगर अफसोस फिर भी यह चमन नाशाद मेरा हो ॥
 कटे वेड़ी गुलामी की तेरी नजरे इनायत से ।
 यही फरियाद करता हूँ वतन आजाद मेरा हो ॥
 उठाते हैं मुसीबत पर मुसीबत जिस तरह से हम ।
 पड़ा पिजरे में मेरी ही तरह सैयाद मेरा हो ॥

गजल ।

खौफ आफत से कहाँ दिल में रिहा आयेगी ।
 बात सच्ची है जो वह लव पै सदा आयेगी ॥

दिल से निकलेगी मरके भी न बतन की उत्कत ।
मेरी मिट्टी से भी खुशबूए चफा आयेगी ॥
मैं उठा लूंगा बड़े शौक से उसको सर पर ।
खिदमते कौम में जो रंजो बला आयेगी ॥
सामना सबो शुजाअत से करूंगा मैं भी ।
खिच के मुझ तक जो कभी तेरे जफा आयेगी ॥

ग़ज़ल ।

देसी खहर की साड़ी मंगादो मुझे ।
जरा चल करके लेकचर सुनादो मुझे ॥
देशी साड़ी विदेशी यह मुझे भाती नहीं ।
पहनकर कोई विदेशी बख़ अब आती नहीं ॥
एक चपल चलाने को लादो मुझे ।
देसी खहर की साड़ी मंगादो मुझे ॥
साबुन विलायती न कभी मैं मंगाऊंगी ।
पोडर विदेशी का न कभी मैं लगाऊंगी ॥
जल्दी कंधी स्वदेशी दिलादो मुझे ।
देसी खहर की साड़ी मंगादो मुझे ॥
फाँते व चैन बेल न हरगिज़ लगाऊंगी ।
चूड़ी रवड़ की फेंक के देशी मंगाऊंगी ॥
एक चपल की जोड़ी दिलादो मुझे ।
देशी खहर की साड़ी मंगादो मुझे ॥
ओटो सुगन्ध और लेवन्डर न लाऊंगी ।
सिरमें कभी किलप न विदेशी लगाऊंगी ॥
सारी वस्तु स्वदेशी दिलादो मुझे ।
देशी खहर की साड़ी मंगादो मुझे ॥

भजन ।

हे प्रभु ! इस देश भारतवर्ष में शुभ ज्ञान हो ।
 सत्प्रेम, गौरव, ज्ञान गुण का प्रेम से अब मान हो ॥१॥
 हम में परस्पर प्रेम हो, शुभ कर्म का सञ्चार हो ।
 निज देश के उत्थान में दुख द्रोह का संहार हो ॥२॥
 सुख से रहें इस देशमें हम प्रेम को तोड़ें नहीं ।
 निज पूर्वजों के नामको, सब भूल कर बोरें नहीं ॥३॥
 देश सेवा में मनुज को, धैर्य से अनुराग हो ।
 निज देश उन्नति मार्गके, सब कंटकों का नाश हो ॥४॥
 अज्ञानतम का नाश हो, सुज्ञान का विस्तार हो ।
 सर्वत्र ही दारिद्र्य रूपी काल का संहार हो ॥५॥
 हर देशवासी के हृदय में धर्म का संचार हो ।
 जगदीश ! भारतवर्ष का अब शीघ्र ही उद्धार हो ॥६॥

मातृ बंदना ।

हे मातृ भूमि ! तेरे, चरणों में शिर नवाऊं ।
 मैं भक्ति भेंट अपनी, सेवा में तेरी लाऊं ॥ १ ॥
 माथे पै तू हो चन्दन, छाती पै तू हो माला ।
 जिह्वा पै गीत तू हो, मैं तेरा नाम गाऊं ॥ २ ॥
 जिससे सपूत जन्मे, श्रीराम कृष्ण जैसे ।
 उस तेरी धूलकी मैं, निज शीस पै चढ़ाऊं ॥ ३ ॥
 व देश मान वाले, चढ़ कर उतर गये सब ।
 गोरे रहे न काले, तुझको ही एक पाऊं ॥ ४ ॥
 सेवा में तेरी अपने, भेदों को भूल जाऊं ।
 वह पुण्य नाम तेरा, प्रति दिन सुनूं सुनाऊं ॥ ५ ॥

तेरे ही काम आऊं, तेरा ही मन्त्र गाऊं ।
 जन और देह तुझ पै, बलिदान मैं चढ़ाऊं ॥ ६ ॥

गज़ल ।

हिन्दुस्तान की कमाई देखो फी कस कुछ कोड़ी छः पाई है ।
 उसमें खर्च होता है जितना फ़ैरिस्त उसकी बनाई है ॥
 तीन की टोपी कमीज़ डेढ़ की टाई बारह आने को ।
 पांच का चश्मा आठाने का कालर टाई लगाने को ॥
 नहीं आठ से कम लगते हैं बास्कट कोट बनाने को ।
 कमसे कम पतलून चार की गैलिस बारह आने को ॥
 तीसरे दिन चार आने इनकी लगने लगी धुलाई है ॥ १ ॥
 साढ़े सात से कम नहीं लगते वेस्टैण्डबाच संगाने में ।
 एक रुपये से कम नहीं लगता फ़ैसी बेल उठाने में ॥
 डासन का फूलबूट सात का है मशहूर जमाने में ।
 बुरुश और पालिश की शीशी दोनों मिलें नौ आने में ॥
 ब्रिटिश की जुर्राब की कीमत दस आने बतलाई है ॥ २ ॥
 तीस की सेकिंडहैंड साइकिल यह भी आज कल का फैशन ॥
 एक मील नहीं चल सकते हैं पैदल सह मिस्टर इण्डियन ॥
 सवा रुपये का खर में सलीपर रखना पड़ता मजबूरन ॥
 गलती हो तो कीजै मुआफ़ में बतलाता हूँ तखमीनन ॥
 एक आना रोज़ाना इनसे लेता बुद्धू नाई है ॥ ३ ॥ हि०
 कंधा साबुन तेल सेफ्टोफ़िन तुमको गिनवाऊं क्या ।
 एक रुपये से कम में उनकी कीमत और लगाऊं क्या ॥
 सिगरेट का जिस कदर खर्च है यह तुमको समझाऊं क्या ॥
 “चन्द्र” कहें यह खर्च थर्ड का फ़र्स्ट क्लास बतलाऊं क्या ।
 इस फ़जूल खर्ची ने ही भारत से भीक संगई है ॥ ४ ॥

गुजल ।

आँखों से फिर दिखा दो भगवन् वहीं जामाना ॥
 वह राज्य चक्रवर्ती वह शाने खुमरवाना ॥
 सन्तान शेर दिल को बस बुझदिली मिटा दो ।
 भीष्म व भीमा सा दो तर्जें बहादुराना ॥
 अर्जुन से तीर अफगान पैदा यहाँ बरार हों ।
 लीरे अद्दू का हर्गिज होवें नहीं निशाना ॥
 हो प्रेम भाइयों में रामों लषण सा पैदा ॥
 दिखलादो फिर भरत सा हुब्बे विरादराना ॥
 आज्ञा में मात पितु के सब कुछ निहार करदें ।
 श्री रामा सा दिखादो पितु भक्ति मुक्कलिसाना ॥
 मोक्षमा कणाद आदिकी फिर कुटियाँ यहाँ दिखावें ।
 पढ़ने को मिल सकें फिर तहरीर फल-सफाना ॥
 मिट जाय आत्मा पर फिर राणाप्रताप से हम ।
 बहरे बतन हों पैदा जज्बाते आशिकाना ॥
 मुह देवियों के दिल में होवें ख्याल पैदा ॥
 सीता सी प्रणायति से वर्तव्य खादिमाना ॥
 गुरुकुल को वह प्रणाली राज्य सहाँ पर करके ॥
 कृष्ण सुदामा ऐस्य दिखला दो दोस्ताना ॥
 शैदाय हक ऋषि सा फिर तो जार दिखला दो ॥
 तकसीर वेद की हो तकरीर अलिमाना ॥
 प्रह्लाद और हकोकत से हो धर्म पर कुर्वा ॥
 सहते रहे हमेशा हरकाते जालि—माना ॥
 “सादिक” बहाम आये उजड़े हुए चम । में ॥
 लव पर हो बुलबुलों के फिर कौम का तराना ॥

भजन ।

भटक रही हैं दुखों में अब हमें बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन् ।
 बनय यही है हमारी हरदम बचाओ स्वामिन्० ॥ १ ॥
 विषय विकारों में फँसकर हमने भले बुरे का न ध्यान रक्खा ।
 शरत में आये तुम्हारी भगवन् बचाओ स्वामिन्० ॥ २ ॥
 बनीं अनारी कहाती अबला न ज्ञान है कुछ न मान है कुछ ।
 धरम करम सब विसार बैठीं बचाओ स्वामिन्० ॥ ३ ॥
 कलह अविद्या की आग दिल में धधक २ कर जला रही है ।
 सुबुद्धि जल की बहा के धारा बचाओ स्वामिन् ॥ ४ ॥
 गृहस्थ आश्रम किसे हैं कहते पती की पूजा का अर्थ क्या है ।
 दया धरम का मरम न जाने बचाओ स्वामिन्० ॥ ५ ॥
 नहीं पढ़ाते हमें हैं कोई न जाने इसका सबब भी क्या है ।
 बनाते मूरख शरम न खाते बचाओ स्वामिन्० ॥ ६ ॥
 हमीं थीं सीता हमीं थी लक्ष्मी हमीं को कहते थे लोग देवी ।
 हमीं से उपजे थे वीर लाखों; बचाओ स्वामिन्० ॥ ७ ॥
 हमारा आदर उठा है जब से तभी से भारत चमन है सूखा ।
 तभी से कायर कपूत उपजे बचाओ स्वामिन्० ॥ ८ ॥
 कभी ये भारत चमक रहा था; सितारा बनके हमारे बल से ।
 परन्तु अब ये उजड़ गया है बचाओ स्वामिन्० ॥ ९ ॥
 तुम्हीं से आशा हमें है सारी; लगी हुई है नज़र तुम्हीं पर ।
 तुम्हीं हो रहबर दिखाओ रस्ता बचाओ स्वामिन्० ॥ १२ ॥

भजन ।

धर्म के नाम पर प्यारे तुम्हें मरना नहीं आता ।
 लहू से कासए तकदीर का भरना नहीं आता ॥

छुरी से पेट फड़वाना तुम्हें आता नहीं प्यारो ।
 हकीकत की तरह कुरबान सर करना नहीं आता ॥
 धर्म की राह पर चलना तुम्हें तो होगया मुशकिल ।
 छुरी की धार टेड़ी पर कदम धरना नहीं आता ॥
 तुम हो औलाद शेरों की मगर अब वहर हस्तीर में ।
 समय का फेर है सीधा तुम्हें तरना नहीं आता ॥
 तवाही का तुम्हारी एक ही कारण है बस मित्रो ॥
 तुम्हें कहना तो आता है मगर करना नहीं आता ॥
 'मुसाफिर' महवीसद महवो है तेरी हिम्मत पर ।
 धर्म की राह में हो नर तुम्हें डरना नहीं आता ॥

भजन ।

धर्म बांसुरी तू बजाए चला जा ।
 जो सोते हैं उनको उठाये चला जा ॥धर्म०॥
 मिटा दे तू नकरत को यक लखत दिल से ।
 तराना मुहब्बत का गाये चला जा ॥धर्म०॥
 न दिल में जगह दे तनफ्फर को हरगिज ।
 प्रेम और उल्फत बढ़ाये चला जा ॥धर्म०॥
 उटादे यह तफरीक सब कहो महकी ।
 तू नजरो में सब की समाये चला जा ॥धर्म०॥
 मुखालिफ से डरकर न तू हार हिम्मत ।
 सदा ओ३म् की तू लगाए चला जा ॥धर्म०॥
 खतर क्या है गह दूर मंजिल है अपनी ।
 कदम अपना आगे बढ़ाए चला जा ॥धर्म०॥
 अछूतों के कर बहम को दूर दिल से ।
 गले से तू सब को लगाए चला जा ॥ धर्म० ॥

न खा गम अगर है मुखलिफ जमाना ।
तू वेदों का डंका बजाए चलाजा ॥ धर्म ॥
फिदा होके ऐ वर्क अब कौम पर तू ।
तरकी का जीना बनाए चलाजा ॥ धर्म ॥

भजन ।

मेरे प्यारे चरखे आओ ।

शौर्य सिखाओ ! दुःख नशाओ ! सुख के साज सजाओ ।

मेरे प्यारे चरखे आओ ।

नव फैशन का भूत उतारो; अन्धकार आँखों से टारो ।

भारत का व्यापार सुधारो; मंत्र स्वदेशी का गुँजारो ॥

चमक उठे भारत का गौरव ऐसा तेज दिखाओ ।

मेरे प्यारे चरखे आओ ॥

दुखद दीनता दूर भगादो; नव जीवन की ज्योति जगादो ।

आशा वर वायु बहादो; कर्त्तव्यों में हमें लगादो ॥

जो भूखों मरते हैं उनको देकर अन्न जिलाओ ।

मेरे प्यारे चरखे आओ ॥

जब से हमने तुम्हें भुलाया; पराधीनता को अपनाया ।

तबसे अपना हुआ पराया; संकट पर नित संकट आया ॥

पर अब भंग हुई है निद्रा आओ धाक जमाओ ।

मेरे प्यारे चरखे आओ ॥

कहाँ गया वह माल खजाना; मिलता नहीं पेटभर दाना ।

सूका अपना माल लुटाना; अब तेरा गुण हमने जाना ॥

तू भारत का रखवांरा था अब भी प्यारे उसे रखाओ ।

मेरे प्यारे चरखे आओ ॥

दमकादे चिहरों पै लाली, चमका दे फिर पूर्व प्रणाली ।

करदे भारत को सुखशाली, भरदे कोष पड़े जो खाली ॥

भारत में घर घर फिर अपनी मीठी तान सुनाओ ।

मेरे प्यारे चरखे आओ ॥

अब सब तुझको अपनायेंगे दाँत न दर दर दिखलायेंगे ।

निश्चय ही सुख को पायेंगे, संतत तेरे गुण गायेंगे ॥

नहीं फँसेंगे अब फैशन में दारिद दूर बहाओ ।

मेरे प्यारे चरखे आओ ॥

तेरा सूत हमें सुख देगा, परार्थीनतां दुख हर लेगा ।

भाव स्वदेशी के भर देगा, हमें एक रँग में रँग देगा ।

स्वर्ग सौख्ययुत देश बनेगा विजय ध्वजा फहराओ ।

मेरे प्यारे चरखे आओ ।

भजन ।

वैदिक धरम का जलवा संसार को दिखादो ।

तारीकिये जहाजत हर सिम्त से मिटादो ॥

देरो हिरम के भगड़े कुछ भी रहे न बाकी ।

बहदानियत को कायल हर शख्स को करादो ।

सिखला दो हक परस्ती वेदों का ज्ञान देकर ।

उस्ताद फिर जहाँ वो बनकर जरा दिखादो ॥

वह मारकत इलाही वह तज्ज आरिफाना ।
 वह राजे योग विद्या हर फई को बताओ ॥
 संसार का तअल्लुक करदो मुहब्बताना ।
 सब मत मतान्नों के भगड़े बस अब मिटाओ ॥
 बस ओ३म् का अलमही हाथों में फिर तुम्हारे ।
 पैगाम वेद अकदस घर घर में जा सुनाओ ॥
 हो यज्ञ के धुर्य से सारे जहाँ मुअत्तर ।
 सतयुग का फिर जमाना सादिक यहाँ बुलाओ ॥

गज़ल पीलू ।

हूँ सब कुछ मैं फिर कुछ नहीं सा हुआ हूँ ।
 मैं हैरत ज़दह सूरते आइना हूँ ॥
 गले से तू सब को लगाए चला जा ॥ धर्म० ॥
 न खा ग़म अगर है मुखालिफ जमाना ।
 तू वेदों का डंका बजाए चला जा ॥ धर्म० ॥
 फिदा होके ऐ वक़ अब कौम पर तू !
 तरकी का जीना बनाए चला जा ॥ धर्म० ॥
 मकां है मेरा दीदये दो जहाँ में ।
 मगर सूरते मर दमक फिर रहा हूँ ॥
 हुआ आसना जद से मैं अपने दम का ।
 उसी दम से मैं दम बखुद हो रहा हूँ ॥
 ये सूरत बनी बस्ते आईने रु में ।
 के मैं आपही आइना बन गया हूँ ॥

तसव्वर में अपने मैं हूँ आप हैरां ।
 समझता नहीं हूँ कि मैं क्या देखता हूँ ॥
 नहीं दूसरा दूसरा मैं ही मुझसा ।
 जो देखो तो मैं आपही दूसरा हूँ ॥
 दुई जिसके दिल से मिटे वोही समझे ।
 कि मैं किस तरह एक का दो हुआ हूँ ॥
 न समझे कोई काल अशआर मेरा ।
 सरासर मेरा हाल में कह रहा हूँ ॥
 नज़र जिस पै आलम की पड़ती नहीं है ।
 बतन उसको मैं आंख में देखता हूँ ॥

भजन ।

भक्त के बस में हैं भगवान ।
 समझ मन मूरख ये अज्ञान ॥
 झूठे बेर शबरी के भाये, साग विदुर के प्रेम से खाये ।
 त्याग दुर्योधन का पकवान ॥ भक्त० ॥
 भक्त हेत डोले बन बन में बलकल वस्त्र धारके तनमें ।
 तोड़ा रावण का अभिमान ॥ भक्त० ॥
 भक्त हेत जो प्यादे धावे ग्राह से गज का फन्द छुड़ाये ।
 भ्रमररे धरतू उन्हीं का ध्यान ॥ भक्त० ॥

भजन ।

नाथ फिर डूबते भारत को बचाने आओ ।
 नाओ मरुधर में है पार लगाने आओ ॥
 प्यार जिस भूमि से गौ लोक में रखते हो ।
 आजभू इस मिकी विपदा को मिटाने आओ ॥

नाथ फिर डूबते भारत को बचाने आओ ।
 जिन जीवोंके लिये तुम अपना कहा करते हो ।
 फँद उन अपनों के गोविन्द छुड़ाने आओ ॥
 नाथ फिर डूबते भारत को बचाने आओ ।
 कर्म योगी बने धर्म के फिर वोर बनें ॥
 देश वालों को यह उपदेश सुनाने आओ ।
 नाथ फिर डूबते भारत को बचाने आओ ॥
 अपने ही घर में लड़ा करते हैं जो राधेश्याम ।
 उन्हीं घर वालों को फिर प्रेम सिखाने आओ ।
 नाथ फिर डूबते भारत को बचाने आओ ॥

गज़ल ।

सेवा में तेरे भारत, तन मन लगायेंगे हम ।
 फिर स्वर्ग का सहोदर, तुझको बनायेंगे हम ॥
 तुझ से जने हैं तूने पालन किया हमारा ।
 उपकार जितने करता, क्या र गिनायेंगे हम ॥
 तेरे ऋणों का बोझा, सर पर धरा हमारे ।
 करके प्रयत्न पूरा उसको चुकायेंगे हम ॥
 तेरे लिये जियेंगे, तेरे लिये मरेंगे ।
 तेरी ही सेवा में यह, जीवन बितायेंगे हम ॥
 घनघोर दुख घटा भी हम पर घिरी खड़ी हो ।
 क्षणमात्र भी न तुझको, जी से भुलायेंगे हम ॥
 तू स्वर्ग है हमारा तू सौख्य-गृह हमारा ।
 तुझसे ही नेह नाता अब तो लगायेंगे हम ॥
 जब जब मरें तुम्हीं में, तब तब सदा जन्म लें ।
 मरने के वक्त ईश्वर से यह मनायेंगे हम ॥

गौरव गिरा है तेरा तेरे दुख ने है मुझको घेरा ।
 दुख में तेरे दुखी हो आँसू बहायेंगे हम ॥
 प्यार सुवन तिहारे, फूट और मद के मारे ।
 बे होश जो पड़े हैं, उनको जगायेंगे हम ॥
 परमेश ! हां हमें तुम, पूरन पुनीत बल दो ।
 बिना आप के सहारे, कुछ भी न पायेंगे हम ॥

शेर ।

हे दमामय ! अब दुखी भारत का बेड़ा पार कर ।
 बाहुबल, विद्या, विभव, धन आदि का विस्तार कर ॥१॥
 गिरते गिरते ठोकरें खाते नहीं कुछ बल रहा ।
 बहुत दुख भेजे प्रभु करके दया अब पार कर ॥२॥
 हो चुका उसके लिये अफसोस करना भूल है ।
 अब किसी विधि दीनबन्धो ! दीन का निस्तार कर ॥३॥
 प्राण दान प्राप्त जैसे हम करें निज देश को ।
 हम में फिर भीषण शिवा की शक्ति का संचार कर ॥४॥
 आत्म बल, विद्या, कला कौशल का फिर से बीज बो ।
 शस्त्र-शासन युक्त शुभ व्यौपार का व्यवहार कर ॥५॥
 देश संवक उच्च स्वर से एक होकर गा रहे ।
 है निवेदन "दैव" ये उद्धार कर उद्धार कर ॥६॥

गजल ।

भगवन् भारत वष के दुःख कुछ कहे जाते नहीं ।
 अब तक सहे हैं बहुत पर अब सहे जाते नहीं ॥१॥

या तो हमारी विनय को प्रभू ध्यान धर सुन लीजिये ।
 हो अगर रुठे तो अब मृत्यु हमें दे दीजिये ॥२॥
 प्राण जाय तो जाय नहीं परवाह करेंगे ।
 और जीवन भर हम सदा देश का दुख हरेंगे ॥३॥
 सोतों को मैं जगादूँ नगमा वतन का गाकर ।
 बिछुड़ों को फिर मिलादूँ धुन प्रीति की उठाकर ॥५॥

गजल ।

ख्वाहिश मेरी है यारब ! अर्जुन मुझे बनाना ।
 शहजोर भीम करना मोहन मुझे बनाना ।
 सानी भरत का मुझको, सरवन मुझे बनाना ।
 वजरङ्ग बतके गम की लङ्का को फूँक डालूँ ।
 बहरे दहन को फाँदूँ कोहे अलम उठा लूँ ॥ १ ॥
 यह आस मेरी पूरी ऐ रब्बे दो जहाँ हो,
 जोशे द्रोण दिलमें तनमें करन सी जाँ हो ।
 बुशारे से मेरे दम खम सहदेव का अयाँ हो,
 मेरी रगों में फिर से भीष्म का खूरबाँ हो ॥
 भालों की चोट सहलूँ हारूँ मगर न हिम्मत ।
 तीरों को सेज पर भी हो लेटने में राहत ॥ २ ॥
 सांगा की तरह खालूँ खुश होंके तेगका फल,
 हो बाजुओं में पैदा प्रताप का सा कस बल ।
 कौमी वकार पर मैं मिटजाऊँ मिस्त जयमल,
 हिफ्जो वतनकी खातिर आला बनूँ कि ऊदल ॥
 अहलो अयाल छूट, सर जाय, जान जाये ।
 माथे पै बुझदिली की लेकिन शिकन न आये ॥ ३ ॥

हासिल मुझे धू की होजाय इस्तकामत,
या बरखा दे तू मुझको प्रह्लाद की सी हिम्मत ।
पूरन की तरह कायम रखूं मैं अपना जत सत,
होकर धर्म पै कुरबां बन जाऊं मैं हकीकत ॥

कट जाय दस्तो पातक, उड़ जाय जिस्म से सर ।

लेकिन न हर्फ आये मुतलक मेरे धर्म पर ॥ ४ ॥

तुझसे यह दस्ते कुदरत यारब अगर मैं पाऊं,
बहबूब दीये वतन को बीड़ा अभी उठाऊं ।
कौमी निशां को ले के आलम में घर आऊं,
भूले हुए फंसाने फिर से “फलक” सुनाऊं ॥

॥ नये ट्रैक्ट ॥

रण भेरी)॥ वीरों की गर्जना)॥ म० गांधी का क्रच -)॥
स्वराज्य की लहर -)॥ महात्मा गांधी का सन्देश -)॥ शराव का
वायकाट)॥ सावन की तड़फ -) भारत माता के भक्त -)॥
स्वतंत्रता की देवी -)॥

मंगला मुखी अर्थात् संस्कार नवीन गीत संग्रह

जिसमें स्त्रियों के गाने योग्य—सोबड़, जच्चा, सतमासा,
चरुआ, छटी, वधावा, गारी, ज्यौनार, घोड़ी, बन्ना, टोका, लगुन
भात, भांवर, डाला, बरोठी, मण्डप, सुहाग, पालना, सोंठ, कन-
छेदन, नामकरण, सावन, होली, मल्हार, प्रभाती आदि अनेक
संस्कारों पर गाने योग्य शुद्ध गीत लिखे गये हैं । पुस्तक देखने
योग्य है । मूल्य ।=) आज ही मंगाकर देखिये ।

हर प्रकार का पुस्तकें मिलने का पता:—ज्वालाप्रसाद बुकसेलर
फुलहरी बाजार, आगरा ।

संग्रहकर्ता व प्रकाशक ला० गिराजकिशोर आग्रवाल आगरा ।
मुद्रक:—बाबू सूरजभानजी गुप्त, केसरी प्रेस, बेलनगञ्ज, आगरा ।

रण भेरी

प्रिय आजादी के मतवाले, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ।
बलि-वेदा पर चढ़ने वाले, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

(१)

आजादी ध्येय हमारा है, सत्याग्रह-शस्त्र सम्भारा है ।
अमरत्व कवच दृढ़ धारा है, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

(२)

हम नित्य सत्य का मान करें, जीवन अपना बलिदान करें ।
भारत पर सब कुरवान करें, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ।

(३)

दुनियां से नाता तोड़ दिया, ममता माया को छोड़ दिया ।
मन रण-क्षेत्र से जोड़ लिया, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

(४)

भारत पर वारे जायेंगे, हम सूखे चने चवायेंगे ।
पीछे नहीं पैर हटायेंगे, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

(५)

स्वादी का केसरिया बाना, पहना मरदाना प्रण-ठाना ।
आजाद रहें या मर जाना, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

(६)

तैयार जेल में जाने को, धुनि जंजीरों में गाने को ।
भारत स्वाधीन बनाने को हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

(७)

घातक ले तोपें खड़े रहें, हम छाती खोले अड़े रहें ।
फांसी के तख्ते चढ़े रहें, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

(८)

हँसते-हँसते मर जायेंगे, मर जायेंगे फिर आयेंगे ।
आकर फिर युद्ध मचायेंगे, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं ॥

आज़ादी का झण्डा

राष्ट्रपति जवाहरलाल देशभक्त

भारत का डंका आलम में बजवाया वीर जवाहर ने ।
स्वाधीन बनो स्वाधीन बनो समझाया वीर जवाहर ने ॥
वह लाल जो मोतीलाल का है, है लाल दुलारा भारत का ।
खोले भारत को उठ करके जगवा दिया वीर जवाहर ने ॥१॥
दे दे इसीचे जिन्दा दिल, कमजोरी दूर भगादी सब ।
रग रग में खूँ आज़ादी का, दौड़ाया वीर जवाहर ने ॥२॥
हिन्दू व मुसलमान सिक्ख जैन, ईसाई पारसी भाई २ हैं ।
सब ऊँच नीच का बहम भेद, मिटवाया वीर जवाहर ने ॥३॥
एक रोशन आग दहकती है, आज़ादी की उसके दिल में ।
जिससे युवकों का मुर्दा दिल, चमकाया वीर जवाहर ने ॥४॥
नवयुवक कड़ों भारत के, भूले थे भोग विलासों में ॥
युवकों की शक्ती को एक दम, चमकाया वीर जवाहर ने ॥५॥
आदर्श चरित्र से वह अपने, युवकों का है सम्राट बना ।
आज़ादी का ऊँचा झंडा, लहराया वीर जवाहर ने ॥६॥
गांधी जब आशीश दे बोले, खुद लूक बनंगा मैं तेरा ।
तब सेहरा राष्ट्र पती का सिर, बंधवाया वीर जवाहर ने ॥७॥
लखकर 'प्रकाश' यह भारत का, आश्चर्य में डूबी है दुनिया ।
कांग्रेस का करके मुट्ठी में, समझाया वीर जवाहर ने ॥८॥

स्वराज्य का झण्डा ॥ शराब का बायकाट ॥

पुस्तक मिलने का पता—लाला गिर्गजकिशोर वैश्य,

पीपलमण्डी—आगरा, मकान नं० ३६१० ।

सिर्फ टाइटिल पेज, आदर्श प्रेस, आगरा में छपा ।